

वज्रसां स्वासा घृष्टं किञ्चिद् ॥ धनस्तु मियाय ॥ ॥ उँ नमा वक्षाय
गुनव नमा धर्माय गा न नमा संघाय मदा रु म । उँ आ ४ दू श्री मग वज्र
स जु न व न व क म ता य न मा सं ग्य क रू ना व रा स न क ना य न मा । स न
म क्तु न म क्तु न मा मि न मा न म ४ र श्वा र्दं त्वां न म स्या मि गु न ना र्थ
यु मि द्ध र्य ॥ य स्य पु ग्गा द कि न त्वां स क्तु नि गा त्म ग त्वा न त्वा पु रा वा य वि क
प प र्द ना त्म का ना प ग्ध न्ना वि न द ग स वि ना स म द्धे क्तु न म स्या मि

[illegible]

पाषाणां पृथ्व्यानां वानमादिनां कृता यस्तान्वनिष्यामि ज्ञायास्तर्गमा
ग्नस्य वाचं ॥ **वगश्रुतं ज्वमधुनसदाया** ॥ अष्टमृगं मयं मंत्रं वरुणीय
युसाहितं सफनत्तसमाकीर्णं ददनरुतदायनी गुनयो वदधम्म
या संघलयश्च तथेव वज्रात्मा निर्घाग्यामि तावनसं पृथुनत्तमधु
नं ॥ **थनपायदमनायाय** ॥ जनादिगतिर्साय ऊन्मन्युर्ववापन
धाय समयापगुना पापं कृगं काविरुमं ववा ॥ यवान्मादिर्गं विविदा

ये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं क्रातुय २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं विनमनीये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं
क्रां २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं स्वर्वायीये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं हन २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं लं
कम्बनीये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं हं २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं ह्रमकाये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं
रुद्र २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं उतावनीये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं दह २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं
महादेवनीये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं यव २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं वायवंगीये हूं रुद्र
स्वाहा ॥ ईं रुद्र २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं वस नूधीना नमालावत विश्वे हूं रुद्र स्वा
हा ॥ ईं सनातनीये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं गृह २ सफपागालयगह ईं गानसफवा

गर्जय २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं म्भामादवी हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं आकट २ हूं रुद्र स्वा
हा ॥ ईं सदाये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं की २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं सयकभीये हूं रुद्र स्वा
हा ॥ ईं ह्र २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं स्वगानाये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं क्रा २ हूं रुद्र स्वाहा
॥ ईं वक्रवगाये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं सां २ सां २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं स्वपुनासाये हूं
रुद्र स्वाहा ॥ ईं सां २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं आतिनीये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं हूं २ हूं रु
द्र स्वाहा ॥ ईं वक्रवत्सनीये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं किलि २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं स
नावीनाये हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं सिनि २ हूं रुद्र स्वाहा ॥ ईं महावत्साये हूं रुद्र स्वा

सा ॥ ई विसि १ हूं रुट् स्वासा ॥ ई चक्रवर्त्तनीये हूं रुट् स्वासा ॥ ई द्विवि २ हूं रुट्
 स्वासा ॥ ई मसावीर्ये हूं रुट् स्वासा ॥ ई काका स्याये हूं रुट् स्वासा ॥ ई उनूका
 स्याये हूं रुट् स्वासा ॥ ई ग्वाना स्याये हूं रुट् स्वासा ॥ ई गूकना स्याये हूं रुट् स्वा
 ई यमदादीये हूं रुट् स्वासा ॥ ई यमइगीये हूं रुट् स्वासा ॥ ई यमउदुनीये हूं
 रुट् स्वासा ॥ ई यमपथनीये हूं रुट् स्वासा ॥ ई चण्डागगकनये वकासा
 कूलकलकलीषर्षा मृदुलामलकीवर्धुधालान्धकानकितिकिलालवहूं
 रुट् स्वासा ॥ ॥ ई नमः सर्वगथागगसतलिनविलासनमिर्गयीचक्रम

॥ ॥ ॥ ॥

म्वनरुष्टानकायडं १ हूं वंसां कसमाऊरी नाथदावजपृथ्वीपति कृ स्वासा ॥
 ॥ नमः ॥ ॥ पनायदानपूजा ॥ वादगलाग्वास्तुति ॥ ॥ ई वजसत्त्वसं
 ग्रहको ॥ ई वज्रवत्तमनरुचं ॥ ई वज्रधर्मकलायवैचं ॥ ई वज्रकर्मकना
 रुव ॥ ई वज्रवीर्यहूं ॥ ई वज्रवंशगो ॥ ई वज्रमृदंगकी ॥ ई वज्रमनऊ
 जू ॥ ई वज्रसास्यहूं ॥ ई वज्रमालागो ॥ ई वज्रगीतकी ॥ वई उचूय
 अ ॥ २ ॥ ई वज्रपृथ्वीहूं ॥ ई वज्रधूपगो ॥ ई वज्रासाककी ॥ ई वज्र
 गन्धजु ॥ ई वज्रनसंगो ॥ ई वज्रवनसंकी ॥ ई वज्रधर्मजु ॥ अमस्त